शास्त्रीयग्रन्थमाला-८

पाणिनीयाष्टाध्याय्या

# नव्यसिद्धान्तकौमुदी

इत्यपरनामविभूषितं

# पौष्पं प्रक्रियाविज्ञानम्

तत्र चतुर्थभागस्य द्वितीयः खण्डः

## आतिदेशिकधातूनां तिङन्ताः कृदन्ताश्च

प्रणेत्री सम्पादयित्री च

दीक्षितपुष्पा

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

शास्त्रीयग्रन्थमाला-८

पाणिनीयाष्टाध्याय्या

# नव्यसिद्धान्तकौमुदी

इत्यपरनामविभूषितं

## पौष्पं प्रक्रियाविज्ञानम्

तत्र चतुर्थभागस्य द्वितीयः खण्डः

## आतिदेशिकधातूनां तिङन्ताः कृदन्ताश्च

प्रणेत्री सम्पादयित्री च

दीक्षितपुष्पा

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

स्वप्रकाशशब्दब्रह्मरूपा वाचामधिष्ठात्री भारती, यदीयान्तःकरणे विलसन्ती विस्फोरयति शास्त्रस्य पङ्क्तिततिं, नवनवस्पन्दवती चिन्तना च येषां शास्त्रस्यानन्तव्योम्नि निरर्गलं प्रधावति, तेभ्योऽनन्तकीर्तिभ्यो राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानस्य कुलपतिपदं सर्वात्मना विभूषयद्भ्यो विद्वन्मण्डलमण्डनेभ्य

आचार्यराधावल्लभत्रिपाठिमहाभागेभ्यः कृतिमिमां समर्प्य

कृतार्थतामनुभवामि ।

# विषयानुक्रमणी


| | विषयः | पृष्ठम् |
|---|---|---|
| १. | अकारादिक्रमेण धात्वनुक्रमणिका | १ |
| २. | णिजन्तधातूनां नवसु लकारेषु रूपाणि | १४ |
| ३. | णिजन्तधातूनां लुङ्लकारः | १८ |
| ४. | णिजन्तधातूनां कृदन्ताः | ६१ |
| ५. | णिजन्तधातूनां ल्यबन्ताः | ७१ |
| ६. | सन्नन्तधातूनां कृदन्ताः | ७६ |
| ७. | सन्नन्तधातूनां दश लकाराः | ७७ |
| ८. | यङन्तधातूनां कृदन्ताः | ८० |
| ९. | यङन्तधातूनां दश लकाराः | ८२ |
| १०. | यङ्लुगन्तधातूनां लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकाराः | ८७ |
| ११. | यङ्लुगन्तधातूनां लुट् लकारः | २१८ |
| १२. | यङ्लुगन्तधातूनां लृट् लकारः | २२० |
| १३. | यङ्लुगन्तधातूनां लृङ् लकारः | २२३ |
| १४. | यङ्लुगन्तधातूनां लिट् लकारः | २२५ |
| १५. | यङ्लुगन्तधातूनां आशीर्लिङ् लकारः | २२३ |
| १६. | यङ्लुगन्तधातूनां लुङ् लकारः | २३८ |
| १७. | यङ्लुगन्तधातूनां कृदन्ताः | २४५ |
| १८. | नामधातवः | २५९ |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वडि | १११० | वर्ष | १४३५ | वाछि | १०१९ | विश | ६२६ | वृतु | १५७२ | वै | २२ | शकि | ९१८ | शल | ४७३ |
| वण | ३१२ | वर्ह | १५१० | वात | १८६१ | विष | ६४२ | वृधु | ८७५ | व्यच | २५१ | शक्लृ | २२५ | शम्ब | १८८० |
| वद | ३४८ | वल | ४७४ | वाश्रृ | १४१३ | विषु | ६४६ | वृधु | १५७५ | व्यध | ३५९ | शच | २५७ | शल्भ | १२९६ |
| वद | १५४४ | वल्क | १८०९ | वास | १९२६ | विष्क | १५८२ | वृश | ८९२ | व्यथ | ३३२ | शट | २८५ | शव | ४७९ |
| वदि | ११८३ | वल्क | १५८१ | विचिर् | ५५० | विष्क | १८१२ | वृष | १८०० | व्यय | ४४१ | शठ | २९७ | शर्व | १३९६ |
| वन | ३७५ | वल्ग | ९७३ | विच्छ | १०२३ | विष्लृ | ६५० | वृषु | ८९७ | व्यय | १७३४ | शठ | १७०७ | शश | ४८४ |
| वन | ३६६ | वल्भ | १२९७ | विच्छ | १५९९ | वी | ११६ | वृहू | ९१० | व्युष | ८२१ | शठ | १७०५ | शष | ४९३ |
| वन | ३७६ | वल्गु | १९६१ | विजिर् | ५५२ | वीर | १८९८ | वॄ | २०५ | व्युष | ८०८ | शठ | १७०३ | शसि | १४८४ |
| वनु | ३६२ | वल्ल | १३५८ | विजी | ५५३ | वृक | ८३९ | वेञ् | २४ | व्येञ् | ४० | शडि | १११४ | शशु | १४९७ |
| वनु | ३७७ | वल्ह | १५१३ | विजी | ५५४ | वृक्ष | १४७८ | वेणृ | ११५२ | व्रज | २७३ | शण | ३२२ | शसु | ५११ |
| वप | ३८६ | वश | ४८५ | विट | ५६४ | वृङ् | २०३ | वञ्चु | ९८९ | व्रज | १६९४ | शद्लृ | ३४१ | शाखृ | ९५६ |
| वभ्र | १३१९ | वष | ४९७ | विथृ | ५७१ | वृजी | ८४६ | वेथृ | ११७२ | व्रण | ३१६ | शद्लृ | ३४२ | शाडृ | ११२९ |
| वम | ४२९ | वस्क् | ९३८ | विद | ५८१ | वृजी | ८५१ | वेद | १९३७ | व्रण | १७१४ | शप | ३८७ | शान | १२३३ |
| वय | ४३४ | वस | ५१० | विद | ५८६ | वृजी | १५७० | वेपृ | १२४६ | व्रश्चू | १०१० | शप | ३८८ | शासु | १४९१ |
| वर | १७३५ | वस | ५२८ | विद | ५८७ | वृञ् | २०२ | वेल | १९०९ | व्री | ९५ | शब्द | १८६६ | शासु | १४९४ |
| वरण | १९४३ | वस | १७५५ | विद | १७६४ | वृञ् | २०४ | वेलृ | १३३१ | व्रीङ् | ९३ | शम | १७३१ | शिक्ष | १४७४ |
| वर्च | १००७ | वसु | ५०९ | विद्लृ | ५७८ | वृञ् | १५३० | वेल्ल | १३५७ | व्रीड | ११३४ | शमु | ४११ | शिखि | ९५७ |
| वर्ण | १६२९ | वह | ५३१ | विध | ५९१ | वृण | ८५९ | वेवीङ् | ११९ | व्रुड | ७२१ | शर्ब | १२८० | शिघि | ९८० |
| वर्ण | १८५० | वा | २३ | विल | ६१० | वृतु | ८६३ | वेष्ट | १०८२ | **श.** | | शर्व | १३९६ | शिजि | १०६७ |
| वर्ध | १८७३ | वाक्षि | १४६३ | विल | १७६८ | वृतु | ८६८ | वेहृ | १५१६ | शक | २२९ | शल | ४६० | शिञ् | ८७ |

**डॉ. पुष्पा दीक्षिता**

अध्यक्षा, पाणिनीयशोधसंस्थानम्

बिलासपुरम्

१.७.१९४२ दिनाङ्के जबलपुरनगरस्य प्रख्यातायुर्वेदचिकित्सकात् शास्त्राणां पारदृश्वनः प्राणाचार्यपण्डितसुन्दरलालशुक्लाज्जानकीदेव्यां लब्धजनिः महामहोपाध्यायाचार्या डॉ. पुष्पा दीक्षिता, आचार्यविश्वनाथत्रिपाठिभ्यो व्याकरणमधीत्य मध्य-प्रदेशशासनस्याथ च छत्तीसगढ़प्रदेशशासनस्य महाविद्यालयीयप्राध्यापकपदान्निवृत्ता।

सा च भगवतः पाणिनेर्महत्तमेन तपसा निर्धारितं पाणिनीयाष्टाध्यायीसूत्रक्रमं साक्षात्कृत्य प्रक्रियायाः सर्वथा नवीनं क्रमं प्रक्रियाविज्ञानं च प्रोद्घाटितवती, येन निखिलाष्टाध्यायी त्रिभिर्मासैरधिगता भवतीति नास्ति संशीतिलेशोऽपि।

**प्रकाशितग्रन्थाः -**

१. अष्टाध्यायीसहजबोधः, अष्टसु भागेषु
(तत्र चत्वारो भागाः प्रकाशिताः)
२. नव्यसिद्धान्तकौमुदी, चतुर्दशसु भागेषु
(तत्र पञ्च भागाः प्रकाशिताः)
३. तिङन्तकोषः (त्रयो भागाः)
४. कृदन्तकोषः (द्वौ भागौ)
५. तिङ्कृत्कोषः (द्वौ भागौ)
६. लकारसरणिः (चत्वारो भागाः)
७. णिजन्तकोषः
८. सन्नन्तकोषः
९. यङन्तकोषः
१०. यङ्लुगन्तकोषः
११. इडागमः (संस्कृते, राष्ट्रभाषायाञ्च)
१२. पाणिनीयाष्टाध्यायीसूत्रपाठः
(प्रकरणनिर्देशसमन्वितः)
१३. प्रकियानुसारिपाणिनीयधातुपाठः
१४. शीघ्रबोधव्याकरणम्
१५. पाणिनीयधातुपाठः (सार्थः)
१६. औपदेशिकः पाणिनीयधातुपाठः
(सार्वधातुकप्रत्ययोपयोगी)
१७. औपदेशिकः पाणिनीयधातुपाठः
(आर्धधातुकप्रत्ययोपयोगी)
१८. तिङ्कृत्कोषः (द्वौ भागौ)
१९. अग्निशिखा (गीतिकाव्यम्)
२०. शाम्भवी (गीतिकाव्यम्)
२१. अपराजितवधूः (खण्डकाव्यम्)
अस्य संपादनमनुवादश्च
२२. प्रबुद्धभारतम् (खण्डकाव्यम्)
अस्य संपादनमनुवादश्च
२३. सौन्दर्यलहरी, अस्याः संपादनम्

**प्रकाश्यग्रन्थाः -**

२४. नव्यसिद्धान्तकौमुदी
(अवशिष्टा नव भागाः)
२५. अष्टाध्यायीसहजबोधः
(अवशिष्टाश्चत्वारो भागाः)
२६. परिभाषेन्दुशेखरस्य
बहुतरपरिभाषाणामन्यथासिद्धिः
अन्ये च